पाठ - ६

पाप के चार हथियार

कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर

गद्यांश क्र - 1 (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. 31)

निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

जॉर्ज बर्नार्ड शॉ का . . . . हत्या और श्रद्धा।

कृति - 1 (आकलन)

1) कृति पूर्ण कीजिए।

1) पाप के चार हथियार ये हैं।

[ ]
[ ]
[ ]
[ ]

2) जॉर्ज बर्नार्ड शॉ का कथन -

2) शब्दों को उचित वर्ग में लिखिए:

पीड़ित वर्ग	पीड़क वर्ग
जीवन में दोष	संसार में पाप
व्यवस्था में अन्याय	व्यवहार में अत्याचार

3) उत्तर लिखिए:

[जीवन की विडंबनाओं पर चोट का प्रभाव]

↓ [सुधारक के आने पर] → [ ]

↓ [सुधारक के चले जाने पर] → [ ]

Scanned by CamScanner

कृति- 2 (शब्द संपदा)

* विलोम शब्द लिखिए :

1) नैतिक × 2) पाप ×

3) सत्य × 4) असफल ×

कृति- 3 (अभिव्यक्ति)

* समाज सुधारक समाज में व्याप्त बुराईयों को पूर्णत: समाप्त करने में विफल रहे' इस कथन पर 40 से 50 शब्दों में अपना मत प्रकट कीजिए।

उत्तर : संसार में अनेक महान समाज सुधारक हुए हैं, वे अपने समाजसुधार के कार्यों से अपना नाम अमर कर गए है। हर युग में अनेक समाज सुधारक समाज को सुधारने का कार्य करते रहे है पर समाज में व्याप्त बुराईयों की तुलना में इनकी संख्या नगण्य है। इसके अलावा समाज सुधारको को जनता का पर्याप्त सहयोग भी नही मिल पाता। इसलिए वे अपने कार्य में पूर्णत! सहयोग भी नही मिल पाता। इसलिए वे अपने कार्य मे पूर्णत! सफल नही हो पाते। इतना ही नही, भिन्न भिन्न कारणों से समाज विरोधी तत्व भी अपने स्वार्थ के कारण समाज सुधारकों के दुश्मन बन जाते है। इससे समाज सुधारकों के कार्य मे केवल अड़चने ही नही आती, बल्कि इनकी जान पर भी बन आती है। इसलिए समाज सुधारको के लिए समाज में व्याप्त बुराईयों को पूरी तरह समाप्त करना संभव नही हो पाया आए दिन लोगो के प्रति होने वाले अन्याय और अत्याचार की घटनाए इस बात का सबूत है कि समाजसुधारक समाज में व्याप्त बुराईयों को पूर्णत! समाप्त करने में विफल रहे है।

Scanned by CamScanner

गद्यांश क्र. 2 (पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र 32)
सुधारक पापों के विरुद्ध ...... और तूफानों का वेग।

कृति - 1 (आकलन)

1) आकृति पूर्ण कीजिए।

- इनके कार्य
  - सुधारक का → [ ]
  - पापी समाज का → [ ]

2) उत्तर लिखिए
* गद्यांश में आए पाप के दो नारे -
1)
2)

3) आकृति पूर्ण कीजिए:
1) सुधारक के सत्य की स्थिति
   1) उपेक्षा की रगड़ से - कुछ तेज हो जाता है।
   2) निंदा की रगड़ से - [ ]
   3) हत्या के घर्षण से - [ ]

2) पाप के इन शस्त्रों के शिकार हुए ये सुधारक

- शस्त्र
  1)
  2)
  3) पिसा हुआ काँच
- सुधारक
  1)
  2)
  3) दयानंद

3) शहादत से सुधारक को मिलनेवाली धार —
- [ ]
- [ ]

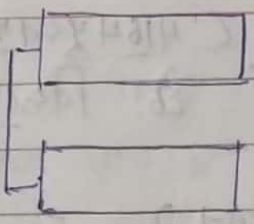

कृति २ : शब्दसंपदा

1) गद्यांश में प्रयुक्त उपसर्गयुक्त शब्द ढूँढकर लिखिए

1) 2) 3) 4)

कृति ३ (अभिव्यक्ति)

* लोगों के सक्रिय सहयोग से ही समाज सुधारक का कार्य सफल हो सकता है इस विषयपर ४० से ५० शब्दों में अपने विचार लिखिए।

उत्तर - समाज सुधार कोई छोटा-मोटा काम नहीं है। इसका दायरा विशाल है इस कार्य को करने का बीडा उठाने वाले को इस कार्य में निरंतर रत रहना पडता है। किसी भी अकेले व्यक्ति के वश का यह काम नहीं है इस कार्य को सुचारु रूप से संपन्न करने के लिए समाज सुधारक को समाज के प्रतिनिधियों एवं निष्ठावान कार्यकर्ताओं का सहयोग लेना आवश्यक होता है। समाज में तरह तरह की विकृतियाँ होती है। इनके बारे में जानकारी करने और उन्हे दूर करने के लिए समाज के लोगों का सहयोग प्राप्त करना अत्यंत आवश्यक होता है। इसके अतिरिक्त किसी भी सामाजिक बुराई के पीछे विभिन्न कारणों से कुछ लोगों का स्वार्थ भी होता है। ऐसे लोगोंसे निपटे बिना इसे दूर नहीं किया जा सकता। बिना लोगो के सक्रिय सहयोग से ऐसे समाज विरोधी तत्वों से पार पाना संभव नहीं हो पाता इसलिए इन सभी बातोंको ध्यान में रखकर समाज सुधारक को लोगों का सक्रिय सहयोग लेना आवश्यक है। लोगों के सक्रिय सहयोग से ही वह अपने कार्य में सफल हो सकता है।

Scanned by CamScanner

* 'पाप के चार हथियार' पाठ का संदेश लिखिए।

→ पाप के चार हथियार पाठ में लेखक कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर ने एक ज्वलंत समस्या की ओर ध्यान आकर्षित किया है। संसार में चारों ओर पाप अन्याय और अत्याचार व्याप्त है, फिर भी कोई संत, महात्मा, अवतार, पैगंबर या सुधारक इसको मुक्ति का मार्ग बताता है, तो उसकी बातों पर ध्यान नहीं देते और उसकी अवहेलना करते हैं। उसकी निंदा करते हैं इतना ही नहीं, इस प्रकार के कई सुधारकों को तो अपनी जान तक गँवा देनी पड़ी है। लेकिन यही लोग सुधारकों, महात्माओं की मृत्यु के पश्चात् उनके स्मारक और मंदिर बनाते हैं और उनके विचारों और कार्यों का गुणगान करते नहीं थकते। जो लोग सुधारक के जीवित रहते उसकी बातों को अनसुना करते रहे, उसकी निंदा करते रहे और उसकी जान के दुश्मन बने रहे, उसकी मृत्यु के पश्चात उन्हीं लोगों के मन में उसके लिए श्रद्धा की भावना उमड़ पड़ती है, और वे उसके स्मारक और मंदिर बनाने लगते हैं।

इस प्रकार लेखक ने 'पाप के चार हथियार' के द्वारा यह संदेश दिया है कि सुधारकों और महात्माओं के जीते जी उनके विचारों पर ध्यान देने और उनपर अमल करने से ही समस्याओं का समाधान होता है, न कि स्मारक और मंदिर बनाने से।

Scanned by CamScanner

* 'पाप के चार हथियार' निबंध का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

→ संसार में पाप, अत्याचार और अन्याय का बोलबाला रहा है और आज भी वह वैसा ही है। इससे लोगो को मुक्ति दिलाने के लिए अनेक महापुरुषों, सुधारकों, समाज सेवकों एवं संत महात्माओं ने अथक प्रयास किया, पर वे अपने प्रयास में सफल नही हो पाए। उन्हे उन्हे समाज के लोगो की उपेक्षा तथा निंदा आदि का शिकार होना पड़ा और कुछ लोगो को अपनी जान भी गँवानी पड़ी। पर, देखा यह गया है कि जीते जी जिन सुधारकों और महापुरुषों को समाज का सहयोग नही मिला और उनकी अवहेलना होती रही, मरने के बाद उनके स्मारक और मंदिर भी बने और लोगों ने उन्हे भगवान - सुधारक कह कर वंदनीय भी बनाया।

यहाँ लेखक यह कहना चाहते है कि मरणोपरांत सुधारक का स्मारक - मंदिर बनना सुधारक और उसके प्रयासो दोनों की पराजय है। अच्छा तो तब होता, जब लोग, सुधारक के जीते जी उसके विचारो को अपनाते और पाप, अत्याचार और अन्याय जैसी बुराईयो के खिलाफ संघर्ष मे उनका सहयोग करते और समाज से इन बुराइयो के दूर होने मे सहायक बनते। इससे सुधारक समाज को पाप अन्याय, भ्रष्टाचार, और अत्याचार जैसी बुराईयो से मुक्ति दिलाने मे सफल हो सकता था। लोगो को सुधारक की उपेक्षा, निंदा अथवा उनके खिलाफ षडयंत्र रचने के बजाय उनके अभियान में अपना पूरा सहयोग देना चाहिए। तभी समाज से ये बुराईयाँ दूर हो सकती है। यही इस पाठ का उद्देश्य है।

Scanned by CamScanner

* साहित्य संबंधी प्रश्न

1) कुन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर जी' के निबंध संग्रहों के नाम लिखिए।

→ निबंधसंग्रहों के नाम - 1) जिंदगी मुस्कुराई 2) बाजे पायलिया के घुँघरू 3) जिंदगी लहलहाई 4) महके आँगन - चहके द्वार।

2) लेखक कुन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर जी की भाषाशैली

→ कुन्हैयालाल मिश्रजी कथाकार निबंधकार एवं पत्राकार थे। आपकी भाषा मँजी हुई सहज-सरल और मुहावरेदार है, जो कथ्य को दृश्यमान और सजीव बना देती है। आपके लेखक लेखन में तत्सम शब्दों का प्रयोग मननीय चिंतन-मनन को अधिक प्रभावशाली बना देता है। आप एक सफल निबंधकार थे।

* 1) शब्दसमूह के लिए एक शब्द लिखिए।
1) जिसे व्यवस्थित न गढ़ा गया हो - अनगढ़
2) निंदा करने वाला - निंदक
3) देश के लिए प्राणों का बलिदान - शहीद देनेवाला
4) जो जीना नहीं जाना - अज्ञेय

* मुहावरे *

निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए।

1) दाल न गलना - चतुराई से काम न आना
वाक्य : ऑफिस के कई लोगों ने उस ईमानदार कर्मचारी को निकलवाने की बड़ी कोशिश की, पर उनकी दाल न गली।

Scanned by CamScanner

2) गड़े मुर्दे उखाड़ना - पुरानी कटु बातों को याद करना
वाक्य : बुढ़िया अक्सर अपने बेटों से गड़े मुर्दे उखाड़ने की भाषा में ही बोला करती थी।

3) फूँक फूँक कर पाँव रखना - अति सावधानी बरतना
वाक्य : सेठ मटरूमल को जब से धंधे में भारी घाटा उठना पड़ा है, तब से वे लेन-देन में फूँक-फूँक कर पाँव रखते हैं।

4) आठ-आठ आँसू रोना। - बहुत अधिक रोना।
बुढ़िया का इकलौता बेटा जब से विदेश में नौकरी करने गया है, तब से वह उसकी याद में आठ-आठ आँसू रोती रहती है।

5) रंग में भंग होना। - प्रसन्नता के वातावरण में विघ्न पड़ना।
वाक्य : कोरोना के लॉकडाउन के कारण मेरे दोस्त नलिन के विवाह समारोह के उत्सव में रंग में भंग हो गया।

Scanned by CamScanner